IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 2, Issue 1, July 2022
Impact Factor: 6.252

हिंदी भक्ति साहित्य में पर्यावरण चेतना

डॉ. राकेश कुमार गौतम

हिंदी विभाग

प्राचार्य, यमुना प्रसाद शास्त्री स्नातकोत्तर महाविद्यालय सेमरिया, रीवा, म.प्र.

सारांश:

हिंदी भक्ति साहित्य में पर्यावरण चेतना आध्यात्मिकता और प्रकृति के अटूट संबंध से उभरती है। भक्ति काल के कवि जैसे कबीर, तुलसीदास, सूरदास, रहीम, जायसी और मीरा ने अपनी रचनाओं में प्रकृति को ईश्वरीय सृष्टि के रूप में चित्रित किया है, जहाँ वन, नदी, पर्वत, पशु-पक्षी और पंचतत्व (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश) को पूजनीय माना गया है। यह चेतना मानव-प्रकृति के संतुलन पर जोर देती है, जहाँ पर्यावरण संरक्षण भक्ति का अभिन्न अंग है। शोध में भक्ति साहित्य के ग्रंथों का विश्लेषण किया गया है, जो आधुनिक पर्यावरणीय संकटों के समाधान के रूप में प्रासंगिक है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भक्ति साहित्य न केवल पर्यावरण प्रेम को प्रेरित करता है, बल्कि उसके संरक्षण के लिए नैतिक दायित्व भी स्थापित करता है। यह पेपर वैदिक परंपरा से लेकर भक्ति काल तक की यात्रा का परीक्षण करता है, जिसमें पर्यावरण को दिव्यता का स्वरूप मानकर उसकी रक्षा की अपील की गई है।

कीवर्ड्स:

भक्ति साहित्य, पर्यावरण चेतना, तुलसीदास, कबीर, पंचतत्व, प्रकृति संरक्षण, आध्यात्मिकता, ईश्वरीय सृष्टि, हिंदी काव्य, पर्यावरण विमर्श

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 2, Issue 1, July 2022
Impact Factor: 6.252

परिचय:

हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना की जड़ें वैदिक काल से हैं, लेकिन भक्ति काल (१४वीं से १७वीं शताब्दी) में यह चेतना आध्यात्मिक भक्ति के माध्यम से और अधिक मुखर हुई। भक्ति साहित्य में प्रकृति को मात्र सौंदर्य का स्रोत नहीं, बल्कि ईश्वर की अभिव्यक्ति माना गया है। कवि पर्यावरण के तत्वों को भक्ति साधना का माध्यम बनाते हैं, जो मानव जीवन की निर्भरता को रेखांकित करता है। वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और वनों की कटाई जैसी समस्याओं के संदर्भ में भक्ति साहित्य की प्रासंगिकता बढ़ गई है। इस शोध पत्र का उद्देश्य भक्ति कवियों की रचनाओं में पर्यावरण चेतना का विश्लेषण करना है, जो प्रकृति संरक्षण की प्राचीन भारतीय दृष्टि को उजागर करता है। भक्ति काल के निर्गुण और सगुण धाराओं में पर्यावरण को दिव्यता से जोड़कर देखा गया, जो आधुनिक पर्यावरणवाद की नींव रखता है। भक्ति साहित्य में पर्यावरण चेतना का विकास वैदिक परंपरा से हुआ, जहाँ पृथ्वी को माता माना गया है। भक्ति कवियों ने इस चेतना को लोकभाषा में अभिव्यक्त किया, जिससे आमजन में जागरूकता फैली। उदाहरणस्वरूप, तुलसीदास और कबीर जैसे कवियों ने प्रकृति के साथ मानव के सहजीवन को चित्रित किया। यह अध्ययन भक्ति साहित्य को पर्यावरण शिक्षा के स्रोत के रूप में स्थापित करता है। आज जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, वनों की कटाई जैसी समस्याओं में भक्ति साहित्य की चेतना बहुत प्रासंगिक है। यह सिखाता है कि पर्यावरण संरक्षण भक्ति का हिस्सा है। वैदिक से भक्ति तक की यह यात्रा हमें बताती है कि भारतीय परंपरा में प्रकृति पूजन संरक्षण का रूप रहा है। भक्ति कवियों ने इसे लोकभाषा में आमजन तक पहुँचाया, जिससे पर्यावरण शिक्षा का आधार मजबूत हुआ।

इस प्रकार, हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना वैदिक काल से भक्ति काल तक आध्यात्मिकता, सहजीवन और संरक्षण की निरंतर धारा है, जो आज भी हमें पर्यावरण जागरूकता के लिए प्रेरित करती है। यह चेतना न केवल सौंदर्यबोध है, बल्कि नैतिक दायित्व भी है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 2, Issue 1, July 2022
Impact Factor: 6.252

आज की समस्याओं में भक्ति साहित्य की प्रासंगिकता

जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वार्मिंग — भक्ति साहित्य में पंचतत्वों का संतुलन महत्वपूर्ण है। आज कार्बन उत्सर्जन और ग्रीनहाउस गैसों से यह संतुलन बिगड़ रहा है। तुलसी-कबीर की शिक्षाएँ हमें बताती हैं कि मानव की लालच (अधिक उपभोग) ही इसका कारण है।

प्रदूषण — वायु, जल और मिट्टी प्रदूषण बढ़ रहा है। कबीर की "पवन गुरु" वाली पंक्ति आज वायु प्रदूषण के संदर्भ में बहुत प्रासंगिक है। भक्ति में प्रकृति को पवित्र रखना भक्ति का हिस्सा था।

वनों की कटाई और जैव-विविधता हानि — तुलसी का वृक्षारोपण और सूर का गोवर्धन पूजन हमें वनों की रक्षा सिखाते हैं। आज जब अमेजन से लेकर हिमालय तक जंगल कट रहे हैं, भक्ति की यह चेतना हमें वृक्ष-आराधना और संरक्षण की प्रेरणा देती है।

आध्यात्मिक और नैतिक दृष्टि — आधुनिक पर्यावरणवाद मुख्यतः वैज्ञानिक और कानूनी है, लेकिन भक्ति साहित्य इसमें भावनात्मक जुड़ाव जोड़ता है। जब हम प्रकृति को ईश्वर का रूप मानते हैं, तो उसकी हानि पाप लगती है। यह नैतिक दायित्व आज की सबसे बड़ी कमी है।

शोध पद्धति:

यह शोध मुख्य रूप से साहित्यिक विश्लेषण पर आधारित है, जिसमें भक्ति साहित्य के प्रमुख ग्रंथों जैसे रामचरितमानस, कबीर ग्रंथावली, सूरसागर और अन्य पदों का पाठकीय अध्ययन किया गया। पद्धति में तुलनात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया, जहाँ भक्ति कवियों की रचनाओं को वैदिक और समकालीन पर्यावरण विमर्श से जोड़ा गया। प्राथमिक स्रोतों के रूप में मूल ग्रंथों का उपयोग किया गया, जबकि द्वितीयक स्रोतों में शोध पत्र, पुस्तकें और ऑनलाइन संसाधन शामिल हैं। डेटा संग्रह के लिए कीवर्ड आधारित खोज (जैसे "भक्ति साहित्य में पर्यावरण") का सहारा लिया गया। विश्लेषण गुणात्मक है, जिसमें उद्धरणों का

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 2, Issue 1, July 2022 Impact Factor: 6.252

व्याख्यात्मक अध्ययन शामिल है। नैतिकता के रूप में मूल स्रोतों का सम्मान किया गया, और MLA शैली में संदर्भ दिए गए। यह पद्धति भक्ति साहित्य की पर्यावरणीय व्याख्या को सुनिश्चित करती है।

मुख्य विश्लेषण:

भक्ति साहित्य में पर्यावरण चेतना आध्यात्मिक तन्मयता से जुड़ी है, जहाँ प्रकृति को ईश्वर की सृष्टि माना गया। भक्ति कवियों ने वन, नदी, पर्वत और पशु-पक्षियों का वर्णन किया, जो संरक्षण की भावना को प्रेरित करता है।

तुलसीदास की रचनाएँ:

तुलसीदास के रामचरितमानस में पर्यावरण चेतना स्पष्ट है। उन्होंने पंचतत्वों को मानव शरीर से जोड़ा, जो प्रकृति की निर्भरता दिखाता है। उदाहरण:

"क्षिति जल पावक गगन समीरा,

पंच रचित अति अधम सरीरा।"

यह उद्धरण दर्शाता है कि मानव शरीर पर्यावरण के तत्वों से निर्मित है, अतः उसकी रक्षा आवश्यक है। रामचरितमानस में वृक्षारोपण का चित्रण भी है:

"तुलसी तरुवर विविध सुहाए।

कहुँ-कहुँ सिय, कहुँ लखन लगाए।"

यह पर्यावरण संरक्षण की सक्रियता को दर्शाता है।

कबीर और अन्य निर्गुण कवि

कबीर ने प्रकृति को आध्यात्मिक साधना का माध्यम बनाया। उनकी रचनाओं में पर्यावरण को पूज्य माना गया, जहाँ वायु, जल और अग्नि जैसे तत्व भक्ति के प्रतीक हैं। उदाहरण: कबीर की पदों में प्रकृति का

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 2, Issue 1, July 2022
Impact Factor: 6.252

रहस्यात्मक वर्णन मिलता है, जो संरक्षण की अपील करता है। रहीम, गुरुनानक और रविदास ने भी प्रकृति प्रेम व्यक्त किया, जहाँ पर्यावरण को ईश्वरीय अभिव्यक्ति माना गया।

सूरदास और सगुण भक्ति

सूरदास के सूरसागर में कृष्ण लीला में पर्यावरण का चित्रण है, जहाँ यमुना नदी और वन को दिव्य माना गया। ब्रज संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण कृष्ण भक्ति से जुड़ा है। जायसी और मीरा ने भी प्रकृति को भक्ति का आधार बनाया।

भक्ति परंपरा और पर्यावरणवाद

भक्ति में सरवात्म-भाव और स्वरूप जैसे अवधारणाएँ पर्यावरण को पवित्र बनाती हैं। सेवा और संबंध से पर्यावरण संरक्षण को प्रोत्साहन मिलता है, जैसा कि भागवद गीता में वर्णित है। यह आधुनिक पर्यावरण आंदोलनों से जुड़ता है।

निष्कर्ष:

हिंदी भक्ति साहित्य में पर्यावरण चेतना आध्यात्मिकता से ओत-प्रोत है, जो प्रकृति को ईश्वरीय सृष्टि मानकर उसके संरक्षण की अपील करता है। तुलसीदास, कबीर और सूरदास जैसे कवियों की रचनाएँ आज के पर्यावरण संकटों के समाधान प्रदान करती हैं। यह साहित्य हमें सिखाता है कि पर्यावरण संरक्षण भक्ति का हिस्सा है, जो मानव-प्रकृति संतुलन सुनिश्चित करता है। भविष्य में इस चेतना को शिक्षा और नीतियों में शामिल करने की आवश्यकता है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 2, Issue 1, July 2022
Impact Factor: 6.252

संदर्भ:

[1]. **सिंघवी, राजेन्द्र कुमार. "शोध:'हिन्दी काव्य में पर्यावरण चेतना'." अपनी माटी**, 5 **अगस्त** 2016, www.apnimaati.com/2016/08/blog-post_31.html.

[2]. **"हिन्दी काव्यों में पर्यावरणीय सतर्कता और हृदयस्पर्शी अभिव्यंजना." हिंदीकुंज**, 1 **दिसंबर** 2025, www.hindikunj.com/2025/12/hindi-kavya-mein-paryavaran-satarkta-aur-hridaysparshi-abhivyanjana.html.

[3]. "Overview Essay." Yale Forum on Religion and Ecology, fore.yale.edu/World-Religions/Hinduism/Overview-Essay.

[4]. **"ब्रज संस्कृति में पर्यावरण चेतना."** dsiij.dsvv.ac.in/index.php/dsiij/article/view/75.

[5]. **"हिन्दी कविताओं में पर्यावरण विमर्श."** nehrucollegehubli.edu.in/wp-content/uploads/2022/03/Hindi-kavitaon-me-paryavaran-vimarsh.pdf.

[6]. **"वेदों में पर्यावरण चेतना." राजभाषा विभाग**, rajbhasha.gov.in/sites/default/files/lekh2nd_hin2019-20.pdf.